वेलेंटाइन डे पर विशेष...

प्रेम के सागर का प्रेम

● ब्रह्माकुमारी किरण, मुंबई (बोरिवली)

प्रेम के बिना जीना मुश्किल ही नहीं, असंभव है। आज संसार में हर प्राणी को आवश्यकता है प्रेम की। रोटी, कपड़ा, मकान के बाद अगर कुछ चाहिए तो वो है प्रेम। हम मनुष्य आत्माओं को शान्ति, शान्तिधाम में मिलेगी, सुख सुखधाम में मिलेगा परंतु आज इस समय क्या? इस समय हरेक को, हर बात में, हर संबंध में प्रेम चाहिए।

प्रेम का दिखावा

आज से 100 वर्ष पूर्व परिवारों में पारस्परिक संबंधों में प्रेम था। प्रेम आज भी है परंतु उस प्रेम में परिवर्तन आ चुका है। पहले के ज़माने में अनाज, कपड़े, जूतों की दुकानें होती थी, आज उन्हीं चीज़ों के शोरूम बन गए हैं। क्यों? क्योंकि इन आवश्यक चीज़ों के साथ दिखावा जुड़ गया है। उसी तरह प्रेम तो पहले भी था और आज भी है लेकिन प्रेम में मिलावट हो चुकी है। अन्य चीज़ों की तरह उसमें वास्तविकता नहीं रही है इसीलिए शो (दिखावा) करना पड़ता है। प्रेम की हज़ारों कहानियाँ, लाखों गीत, लाखों फिल्में बनी हैं परन्तु परस्पर प्रेम नहीं रहा है।

विकृत प्रेम

आज की दुनिया में प्यार झूठा, स्वार्थ का, दिखावे का, सौदेबाज़ी का, काम निकालने का और चमड़ी-दमड़ी का है। ऐसे झूठे प्यार का दम भरने वाले लोग हताश, निराश और उदास दिखायी देते हैं। सच्चे प्यार की कमी ही झूठा अर्थात् ज़हरीला बना देती है। आज सर्वत्र विकृत प्रेम का ही बोलबाला है। यह प्रेम दैहिक सुंदरता पर आधारित है। प्रेम को काम वासना का पर्याय मान लिया गया है। वासनायुक्त मनुष्य प्रेम के नाम पर नीच से नीच कर्म करने से भी परहेज नहीं करता। नीच कर्मों की दास्तान अखबारों में आए दिन छपती रहती है। जब प्रेम करने वाला स्वयं को देह मानकर दूसरों को भी दैहिक दृष्टि से देखता है तब उसका प्रेम 5 तत्वों के शरीर में अटक कर रह जाता है। यह प्रेम की अशुद्धि है। अगर प्रेम करने वाला स्वयं को आत्मा निश्चय कर दूसरों को भी आत्मिक दृष्टि से देखे तो प्रेम पवित्र हो जाता है।

सच्चा प्रेम

सच्चा प्रेम पारस के समान होता है, श्रेष्ठ वृत्ति वाला और विकारों से पूर्णतया रहित होता है। सच्चा प्रेम झुकना सिखाता है, उसमें अहम् भाव नहीं होता। जिनसे प्रेम होता है उनकी कमी अपनी कमी महसूस होती है, उनकी काँटे जैसी बातें भी फूल महसूस होती हैं। सच्चा प्रेम मर्यादित, स्वानुशासित होता है, प्रेम से आत्मा सुंदर हो जाती है अर्थात् उसके कर्म सुंदर हो जाते हैं। किसी कर्म में शांति, किसी में शक्ति और किसी में ज्ञान की आवश्यकता होती है लेकिन प्रेम तो हर कर्म में चाहिए तभी तो वह कर्म सुंदर कहलाएगा। सुंदरता से प्रेम नहीं, प्रेम से सुंदरता दिखाई दे। कहा जाता है, यदि सुख में कोई याद आए तो समझो हम उनसे प्रेम करते हैं और दुख में कोई याद आए तो समझो वो हमसे प्रेम करते हैं। हम सभी को दुख में 'परमात्मा' ही याद आते हैं क्योंकि वो सही अर्थ में हमसे प्रेम करते हैं।

ईश्वरीय प्रेम

परमपिता परमात्मा हम बच्चों से सच्चा प्रेम करते हैं। तो क्यों न हमें भी उस प्रेम के सागर को अपना प्रिय बना लेना चाहिए? ईश्वर से प्रेम एक ऐसी शक्ति है जिससे हमारी दृष्टि किसी भी वस्तु या व्यक्ति पर पड़ेगी तो उन्हें भी प्यार की भासना आयेगी। जिसके अंदर परमात्म प्यार होगा वह हर आत्मा के प्रति शुभ भावना, शुभ-कामना, रहम की भावना रखेगा, जैसे बाबा हम बच्चों के प्रति रखते हैं। हम कैसे भी क्यों न हों, वे हमारी कमी-कमज़ोरी निकालकर अपने समान बना लेते हैं। परमात्म प्यार ऊँचा है, श्रेष्ठ है, उनका प्यार पात्र आत्माओं

को ही प्राप्त होता है। भगवान से प्यार करने से पहले हमें खुद से प्यार करना पड़ेगा। जिसने खुद से और खुदा से प्यार करना सीख लिया मानो उसने सब कुछ सीख लिया।

आत्माएँ कभी पतित तो कभी पावन बनती हैं, कभी प्रेम तो कभी नफरत भी करेंगी लेकिन परमात्मा सदैव प्यार के सागर हैं। जब हम परमात्मा की ओर उन्मुख होते हैं तभी हमें उस पवित्र प्रेम का अनुभव होता है। जितना-जितना मनुष्य भगवान के करीब आता है उतना उसके अंदर भी नि:स्वार्थ प्यार उत्पन्न होता है। भगवान प्रेम के चुंबक हैं। उनके साथ प्यार करने से हम भी उनके समान बन जायेंगे। इतने जन्मों तक हम देहधारियों से प्रेम करते आए, यह एक अंतिम जन्म मिला है परमात्मा से प्यार करने और उनका प्रेम पाने के लिए इसलिए उनसे प्रेम कर हम भी सच्चे प्रेम के अधिकारी बनें। परमात्म प्रेम में वो जादू है जो हम देह की सुध-बुध तक भी भूल जाते हैं और मनुष्य से देवता बन जाते हैं। ईश्वरीय प्रेम कैसी भी विपरीत बुद्धि आत्मा को भी सहयोगी बना देता है, गिरे हुए को उड़ने के पंख देता है, मुश्किल से मुश्किल कार्य के लिए हिम्मत देता है, दुश्मन को भी मित्र बना देता है, पत्थर को पिघला कर मोम कर सकता है।

प्रेम देने से मिलता है

कई लोग प्रेम पाकर नहीं, प्रेम देकर खुशकिस्मती महसूस करते हैं। कई हैं जिन्हें कभी किसी का प्रेम नहीं मिला परन्तु वे अपने बच्चों को, साथियों को, यहाँ तक कि अपने बूढ़े मात-पिता को प्रेम देकर बेहद प्यार, बेहद खुशी का अनुभव करते हैं क्योंकि देना ही लेना है। प्रेम पाने में जो अनुभव है उससे अधिक सुखद अनुभव प्रेम देने में है। इसलिए ईश्वरीय महावाक्य हैं, **''सदा हर समय, हर आत्मा से, हर परिस्थिति में स्नेही मूर्त भव। कभी भी अपना स्नेही मूर्त, स्नेह की सीरत, स्नेही व्यवहार, स्नेह के सम्पर्क-सम्बन्ध को छोड़ना मत, भूलना मत। चाहे कोई व्यक्ति, चाहे प्रकृति, चाहे माया कैसा भी विकराल रूप, ज्वाला रूप धारण कर सामने आये लेकिन विकराल ज्वाला रूप को सदा स्नेह के शीतलता द्वारा परिवर्तन करते रहना। स्नेह लेना है, स्नेह देना है। सदा स्नेह की दृष्टि, स्नेह की वृत्ति, स्नेहमयी कृति द्वारा स्नेही सृष्टि बनानी है। कोई स्नेह नहीं भी दे लेकिन आप मास्टर स्नेह स्वरूप आत्मायें दाता बन रूहानी स्नेह देते चलो। आज की जीव आत्मायें स्नेह अर्थात् सच्चे प्यार की प्यासी हैं। स्नेह की एक घड़ी अर्थात् एक बूँद की प्यासी हैं। सच्चा स्नेह न होने के कारण परेशान हो भटक रहे हैं। सच्चे रूहानी स्नेह को ढूंढ रहे हैं। ऐसी प्यासी आत्माओं को सहारा देने वाले आप मास्टर ज्ञान सागर हो।''** ❖

जब मरते-मरते बाबा ने बचाया

सूबेदार आर.सी.चतुर्वेदी

मैं भारतीय सेना में सूबेदार (शिक्षा) रैंक में कार्यरत हूँ। अप्रैल, 2013 में मैं भोपाल से दो दिन के आकस्मिक अवकाश पर अपने घर ग्वालियर गया था। वापस ड्यूटी पर आने के लिए आंध्र प्रदेश एक्सप्रेस का इन्तज़ार कर रहा था।

गाड़ी आई और मैं मिलिट्री कोच में चढ़ने का प्रयास करने लगा मगर कोच में पहले बैठे फौजियों ने दरवाज़ा नहीं खोला। जब गाड़ी चलने लगी तो जल्दी से विकलांग कोच में चढ़ गया। तभी देखा कि मिलिट्री कोच का दरवाज़ा खोल दिया गया है। मैं मिलिट्री कोच में चढ़ने के लिए विकलांग कोच से उतर गया। इस चक्कर में गाड़ी के साथ ही घिसटने लगा। तभी गाड़ी की गति कुछ कम हुई। मुझे लगा, किसी ने सहारा देकर मुझे उठा दिया और जल्दी से मिलिट्री कोच में चढ़ा दिया। आस-पास देखा तो कोई व्यक्ति नहीं था। सचमुच बाबा ने मुसीबत के समय आकर मुझे बचा लिया। शुक्रिया शिवबाबा। ❖